Chapter 8

bihar board class 9 history notes कृषि और खेतिहर समाज

कृषि और खेतिहर समाज

महत्त्वपूर्ण तथ्य -लैटिन भाषा के अनुसार एग्रीकल्चर अर्थात् कृषि का अर्थ भूमि की जुताई होता है। हालांकि कृषि के अंतर्गत पशुपालन, वानिकी तथा मत्स्य पालन आदि भी आते हैं। प्राचीन अवशेषों के अनुसार कृषि की शुरुआत नव पाषाणकाल में हुई थी। सिन्धु नदी जलोढ़ मिट्टी बहाकर अपने साथ लाती थी तथा इसे बाढ़ वाले मैदानों में छोड़ जाती थी जिससे पैदावार बढ़ जाती थी। हड़प्पा काल में भी हल प्रयोग करने का प्रमाण मिलता है। फसल काटने के लिए शायद पत्थर के हौसयों का प्रयोग होता था। सिंधु सभ्यता के लोग मुख्यत: गेहूँ, जौ, राई, कपास, मटर, अनाज आदि उपजाते थे। इसके अलावा वे तिल तथा जी भी उपजाते थे। मोहेजोदड़ो, हड़प्पा तथा कालीबंगा में अनाज को बड़े-बड़े कोठारों में पारिश्रमिक चुकाने तथा संकट के समय काम आने के लिए जमा किया जाता था। सबसे पहले कपास सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने ही उपजाई थी।

भारत एक कृषिप्रधान देश है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। भारत की 51% भाग कृषि योग्य है तथा दो-तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर रहती है। भारत में भूमि उपजाऊ है लेकिन मानसून पर निर्भरता तथा अनेक कारणों से कृषक अंतिम समय तक अपने उत्पादन को लेकर अनिश्चित रहते हैं। आजादी के पहले की तुलना में आजादी के बाद की स्थिति में काफी सुधार आया है।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है तथा इसकी 80% जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। राज्य का लगभग 70% भूमि कृषि योग्य है। बिहार के अधिकांश भाग मैदानी है तथा सदियों से यहाँ कृषि हो रही है। कृषि के वाणिज्यीकरण, औद्योगिकीकरण तथा आधुनिक तकनीक से परिचित न होने के कारण कृषि आज भी पुराने तरीके से ही होती है। कृषि पर जनसंख्या को बढ़ते बोझ, अनुपस्थित भू-स्वामित्व, सिंचाई की कमी, बिखरे खेत, अपर्याप्त खाद, खेती के पुराने ढंग तथा बीजों की समस्या के कारण प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम है।

बिहार की कृषि के अंतर्गत चार फसलें बोयी जाती हैं:-

(i) भदई फसलें-ये फसलें मई-जून में बोयी जाती हैं तथा अगस्त-सितम्बर में काट लीजाती हैं। मक्का, ज्वार, बाजरा, जूट, उड़द, सनई, महुआ इत्यादि इस मौसम की प्रमुख फसलें हैं।

(i) अगहनी फसलें-इनकी बुआई जुलाई-अगस्त में होती है और नवम्बर-दिसम्बर में ये तैयार हो जाती हैं। धान, कुलथी, तिल, आलू, तेलहन, सब्जी, मकई, कपास, गन्ना, पटसन इत्यादि इसकी मुख्य फसलें हैं।

(iii) रबी फसलें-ये बसंत ऋतु की फसलें हैं। इसकी बुआई अक्टूबर-नवम्बर में होती है तथा यह मार्च-अप्रैल तक तैयार हो जाती है । इन फसलों में अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है। प्रमुख फसलों में गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों, मसूर, अरहर इत्यादि हैं।

(iv) गरमा फसलें-ये ग्रीष्मकालीन फसलें हैं। इसकी बुआई मार्च-अप्रैल में होती है तथा कटाई जून में होती है। फसलों के ग्रीष्मकालीन धान, मकई, मूंग, चना, आम, केला, तरबूज,

https://www.evidyarthi.in/

ककरी, सब्जियाँ एवं प्याज प्रमुख हैं।

बिहार की फसलों को उनकी प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है

(1) खाद्य फसलें-धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार-बाजरा, चना, जौ, दलहन, तेलहन इत्यादि।

(ii) व्यावसायिक फसलें या नकदी फसलें-गन्ना, पटसन, कपास, तम्बाकू, आलू, तेलहन, दलहन, लाल मिर्च इत्यादि।

(ii) पेय फसलें-चाय

(iv) रेशेदार फसलें-कपास, जूट, रेशम इत्यादि।

(v) मसालें-लालमिर्च, लहसुन, हल्दी, धनिया, मेंथी इत्यादि।

बिहार की प्रमुख फसलें

(i) चावल या धान-यह बिहार की प्रमुख फसल है। यह उष्णा जलवायु की फसल है जो 20°-200°C तक की तापमान में दोमट मिट्टी में उपजाई जाती है। धान के अंतर्गत सर्वाधिक भूमि रोहतास जिला में है।

(ii) गेहूँ-गेहूँ बिहार की दूसरी प्रमुख फसल है। यह शीतोष्ण कटिबंधीय फसल है। इसके लिए बोते समय 10-15°C तथा पकते समय 20°C-30°C तक की तापमान की जरूरत होती है। वर्षा 50 cm-75 cm तक होनी चाहिए तथा इसके लिए हल्की दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है।

(iii) मकई या मक्का-यह गर्म एवं आई जलवायु की फसल है। इसके लिए 25°C 30°C तक का तापमान अच्छा होता है। वर्षा 50 cm-100 cm के बीच होनी चाहिए। इसके लिए नाइट्रोजन युक्त गहरी दोमट युक्त मिट्टी अच्छी होती है।

विभिन्न प्रकार की खेतियाँ

भारत की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। यहाँ विभिन्न प्रकार की खेती करने का प्रचलन है। खेती के तरीकों में झूम खेती, पारम्परिक खेती तथा गहन खेती का प्रचलन है।

,

(i) झूम खेती-सभ्यता की शुरुआत में जंगलों को आवश्यकतानुसार काट कर खेती की जाती थी। आज भी पहाड़ी इलाकों में आदिवासी समाज में झूम खेती की जाती है। आदिवासी समाज पृथ्वी को अपनी माता समझते हैं तथा उसपर हल नहीं चलाना चाहते। अत: वे वर्षा से पहले जंगल में आग लगा देते हैं तथा राख पर बीज छिड़क देते हैं लेकिन इस खेती से पर्यावरण पर असर पड़ता है।

(ii) पारम्परिक खेती-इसके तहत फसल उत्पादन से ही कुछ बीज वे अगले फसल के लिए रख देते थे। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहते थे। अधिकांश कृषि कार्य जानवरों द्वारा कराया जाता था। अत: पारम्परिक कृषि से उत्पादन ज्यादा नहीं होता था। मिट्टी की उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे कम होती जाती थी। लेकिन आज भी इसी तरीके से खेती की जाती है।

(iii) गहन खेती-गहन खेती का अर्थ होता है एक ही खेत में अधिक फसल लगाना। जिन क्षेत्रों में सिंचाई संभव हुई है वहाँ किसान उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग करने लगे हैं। इससे प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है।

बोझ अत: दो खाद्यान्न फसलों के बीच एक दलहनी फसल लगायी जाती है जिसे फसल चक्र कहते

(iv) फसल चक्र-एक ही फसल हमेशा लगाने से भूमि की शक्ति कम होने लगती है।

हैं। दलहनी फसलों की जड़ों की गांठ में नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु होते हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं।

https://www.evidyarthi.in/

(v) मिश्रित खेती-एक खेत में एक ही समय में दो या तीन फसल लगाने की विधि को मिश्रित खेती कहते हैं।

(vi) रोपणी खेती-यह एक विशेष प्रकार की झाड़ी अथवा वृक्ष कृधि है जिसे 1920 शताब्दी में अंग्रेजों ने शुरू किया था। इसमें अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। इसके अन्तर्गत रखर, चाय, कहवा, कोको, मसाले, नारियल तथा फेल इत्यादि आते हैं। इस प्रकार की कृषि उत्तर-पूर्वी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों, पश्चिम बंगाल के हिमालयी क्षेत्रों, प्रायद्वीपीय भारत के नीलगिरी, अन्नामलाई की पहाड़ियों में होती है।

आज बढ़ती हुई जनसंख्या की पूर्ति के लिए फसल उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता है। सरकार भी ऋण मुहैया करवाती है तथा फसल बीमा के माध्यम से कम उत्पादन होने पर क्षतिपूर्ति करती है। बिहार में होनेवाली प्रमुख व्यावसायिक फसलों में केला, लीची तथा गन्ना प्रमुख हैं। बिहार में केले की खेती हाजीपुर एवं नवगछिया इलाके में होती है। मुजफ्फरपुर का इलाका शाही लीची के लिए जाना जाता है। गन्ना की खेती पूर्णिया, सहरसा एवं पश्चिमी चम्पारण आदि इलाके में की जाती है।

भारत में कृषि की स्थिति सुधारने के लिए उसे उद्योग का दर्जा देने की जरूरत है। कृषकों को व्यावसायिक फसलों तथा उद्योग आधारित कच्चे माल का उत्पादन करना चाहिए। इससे उनको रहन-सहन का स्तर बढ़ेगा तथा आमदनी भी बढ़ेगी।

कृषकों को कृषि के लिए पारंपरिक खेती की बजाए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। वैज्ञानिक पद्धति से उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। उन्नत बीजों के प्रयोग से कम समय में अच्छी खेती प्राप्त हो जाती है। उर्वरक का प्रयोग करने से भूमि पुनः उर्वर हो जाती है। कीटनाशी, खरपतवारनाशी के प्रयोग से खेती को नष्ट होने से बचाया जा सकता है। आधुनिक यंत्रों की मदद . से कृषि-कार्य समय पर पूरा हो जाता है एवं समय की भी बचत होती है।

अत: कृषि के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण काफी लाभदायक है।

https://www.evidyarthi.in/